इकाई 21 रूढ़िवाद

इकाई की रूपरेखा

21.1 प्रस्तावना

21.2 रूढ़िवाद का अर्थ

21.3 रूढ़िवाद अवधारणा के विभिन्न प्रयोग

- 21.3.1 स्वभावगत रूढ़िवाद
- 21.3.2 स्थितिगत रूढ़िवाद
- 21.3.3 राजनीतिक रूढ़िवाद

21.4 रूढ़िवादः उसकी खास विशे-ताएँ

- 21.4.1 इतिहास तथा परम्परा
- 21.4.2 मानवीय अपूर्णता, पूर्वाग्रह तथा विवेक
- 21.4.3 जैविक समाज, स्वतंत्रता तथा समानता
- 21.4.4 सत्ता तथा शक्ति
- 21.4.5 सम्पत्ति तथा जीवन
- 21.4.6 धर्म तथा नैतिकता

21.5 कुछेक प्रतिनिधिक रूढ़िवादी

21.6 सारांश

21.7 अभ्यास प्रश्न

21.1 प्रस्तावना

रूढ़िवाद एक ऐसी विचारधारा के रूप में, जो किसी स्थापित व्यवस्था तथा किसी सम्मान की रक्षा तथा यथास्थिति को बनाए रखने, अथवा शास्त्रीय दृ-टि से एक दक्षिण-पंथी धारणा स्वरूप आज की एक अनिवार्य बौद्धिक शक्ति है। विचारों के संसार में इस विचारधारा के मूल सिद्धान्त हमारे समय के अनेक समाजों में इसे पनपता देखा जा सकता है। रूढ़िवाद के चिन्तक उस के आधारों से जुड़े सिद्धान्तों पर एकमत रखते हैं। क्लिंटन रॉस्सीटर ने रूढ़िवाद के सिद्धान्तों/आधारों को निम्नलिखित बताया हैः (i) वृहद् धर्म द्वारा समर्पित तथा अनुमोदित एक सार्वभौम नैतिक व्यवस्था का अस्तित्व; (ii) सभ्य व्यवहार के पीछे लोगों के स्वरूप में निहित हठी एवं अपूर्ण अविवेकता तथा पाप-बोध की प्रवृत्ति; (iii) मन, तन तथा चरित्र के गुणों में लोगों में प्राकृतिक असमानता; (iv) सामाजिक वर्गों व व्यवस्थाओं की अनिवार्यता और इसे कानून की शक्ति द्वारा मिटाने के प्रयास की भूल में आस्था; (v) वैयक्तिक स्वतंत्रता तथा सामाजिक व्यवस्था की सुरक्षा हेतु निजी सम्पत्ति की महत्वपूर्ण भूमिका में विश्वास; (vi) प्रगति की अनिश्चितता तथा ये मान्यता कि समाज के विकास के लिए प्रगति एक मुख्य नुस्खा है; (vii) एक शासन करने वाली कुलीन-तंत्रीय व्यवस्था की आवश्यकता; (viii) मानवीय विवेक की सीमित खोज़ अर्थात् मानवीय विवेक में विश्वास का कम होना तथा उनके चलते परम्पराओं, संस्थाओं, चिह्नों, रीति-रिवाजों तथा यहाँ तक कि पूर्वाग्रहों में आस्था; (ix) बहुमत शासन के सशक्त अत्याचार तथा दो-ा क्षमता के चलते राजनीतिक शक्ति को विकसित, सीमित तथा संतुलित करने की अनुकूलता की ज़रूरत।

एक मनोवृत्ति के रूप में रूढ़िवाद समानता की स्वतंत्रता को, परिवर्तनों पर परम्पराओं को, राजनीति पर इतिहास को, वर्तमान तथा भवि-य पर अतीत का, जिज्ञासु पर सावधान व्यक्ति को तथा परिवर्तनों की माँग करने वाले समाज पर स्थापित/स्थिर समाज को प्राथमिकता देता है।

21.2 रूढ़िवाद का अर्थ

'रूढ़िवाद' की अवधारणा के अनेक अर्थ लिए जाते हैं। यह एक ऐसे व्यक्ति का बोध देता है, जिसका व्यवहार नम्र अथवा चौकस होता है, अथवा ऐसा व्यक्ति जिसकी जीवन-शैली प्रायः पारंपरिक, नैि-ठक अथवा जो परिवर्तनों से संकोच करता है अथवा उनसे डरता है। रूढ़िवाद ऐसी विचारधारा है, जो पक्ष की अपेक्षा विरोध अधिक करती है। एन्ड्रयू हैवुड (*पोलिटिकल आइडिआलजिस*) के अनुसार, 'इस विश्वास के तथ्य में, उदाहरणार्थ, यह सत्य है कि रूढ़िवादी पक्ष की अपेक्षा विरोध के सम्बन्ध में अधिक स्प-ट सूझ-बूझ रखते हैं। उस सीमा तक, रूढ़िवाद एक नकारात्मक विचारधारा है, जो परिवर्तन का प्रतिरोध एवं परिवर्तन को लेकर सन्देह व्यक्त करती है। इस दृ-टि से, रूढ़िवाद यथास्थिति का समर्थन करता है। अतः यह कहा जा सकता है कि रूढ़िवाद एक विचारधारा से अधिक एक राजनीतिक अभिवृत्ति है। बिना रूढ़िवादी धारणा में विश्वास किए जब लोग परिवर्तन का विरोध करते हैं, तो उन्हें रूढ़िवादी समझा जा सकता है। पूर्व सोवियत संघ में स्टालिनवादियों ने जब 'समाज की पुनः समाजवादी रचना' एवं 'खुलेपन' का विरोध किया था, तब वे अपनी क्रियाओं में रूढ़िवादी अवश्य थे, परन्तु उन्हें राजनीतिक विचारधारा की दृ-टि से रूढ़िवादी नहीं कहा जाता था। परिवर्तन का विरोध रूढ़िवाद में निहित उसका सारत्व है। रूढ़िवादियों को अन्य विचारधाराओं में विश्वास करने वालों से अलग रखने के मुख्य तर्क एवं मूल्य वह हैं, जो रूढ़िवादी अपने लक्ष्यों को बनाए रखने में प्रस्तुत करते हैं।

रूढ़िवाद एक मनोवृत्ति अर्थात जीवन की ओर एक दृ-टिकोण, अर्थात् जैसा कि ह्यू सैरिल कहता है, "एक मानव मस्ति-क की प्राकृतिक स्ववृत्ति" से अधिक है। रूढ़िवादी अमूर्त सिद्धान्तों की अपेक्षा अपने तर्कों को अनुभव तथा वास्तविकता से अधिक जोड़ते हैं। रूढ़िवाद मात्र तथ्यकतावाद नहीं है और न ही यह अवसरवाद हैं। यह लोगों के बारे में, उन समाजों के बारे में जिन में लोग रहते हैं तथा राजनीतिक मूल्यों की महत्ता के बारे में कुछेक राजनीतिक विश्वासों पर आधारित हैं। इस दृ-टि से जैसा कि एन्ड्रयू हैवड कहते हैं, 'रूढ़िवाद को उदारवाद तथा समाजवाद की भांति एक अधिकृत रूप से विचारधारा कहा जा सकता है'।

रस्सल कर्क (*द कनज़रवॅटिव माइंड*) ने रूढ़िवाद के सार को बताते हुए कहा हैः "रूढ़िवाद मानवता के प्राचीन नैतिक परम्पराओं का संरक्षण है और कि एक रूढ़िवादी के लिए रीतियाँ, प्रथाएँ, संरचनाएँ तथा प्रदेशन एक सह्य नागरिक व्यवस्था के आधार होते हैं।" उन्होंने यह भी कहा, "रा-ट्रों की महान शक्ति के आवेग स्थानीय अधिकारों तथा निजी सम्पत्ति तथा जीवन की अभिरुचियों के पक्ष में प्रदेशन तथा पुरानी मर्यादाओं, परिवार तथा धार्मिक मान्यताओं के पक्ष के तत्व हैं।"

कर्क ने रूढ़िवादी चिन्तन के छः नियमों को सूचीबद्ध किया हैः

1. ''प्राकृतिक कानून के एक समूह में विश्वास जो समाज तथा अन्तरात्मा पर शासन करता है''।
2. ''एकरूपता, समतावाद तथा उपयोगितावाद का विरोध करते हुए मानवीय अस्तित्व की रहस्यमता तथा विविधता के प्रति स्नेह''।

3. ''कानून व न्यायालय तथा ईश्वर के निर्णय से सम्बन्धित समानता तथा एक वर्गविहीन समाज का विरोध करते हुए इस तथ्य में विश्वास कि नागरिक समाज को व्यवस्थाओं व वर्गों की अधिक आवश्यकता होती हैः परिस्थितियों की समानता का मतलब है, नीरसता तथा दासता की समानता''।

4. ''स्वतंत्रता तथा खुशहाली को एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। जहाँ उन्हें अलग किया जाता है, वहाँ सरकार सबकी स्वामी बन जाती है''।

5. ''प्रदेशन में विश्वास; अराजकता तथा व्यक्ति द्वारा शक्ति की प्राप्ति की लालसा पर रीति-रिवाज़, प्रथाएँ तथा पुरानी रिवायतें नियंत्रण का काम करती हैं''।

6. ''परिवर्तन कोई अच्छा सुधार नहीं होता; एक राजनीतिक नेता का मुख्य गुण उसकी समझदारी एवं दूरदर्शिता होती है''।

रूढ़िवाद व्यक्तिवाद का दर्शन है, एक स्वायत व्यक्ति का दर्शन, अहस्तांतरित अधिकारों के स्वामी का दर्शन, एक ऐसे व्यक्ति का दर्शन जिसकी जड़ें सशक्त नैतिक मूल्यों में होती हैं तथा एक ऐसे व्यक्ति का दर्शन जो परम्पराओं द्वारा पोि-ात होता है।

21.3 'रूढ़िवाद' अवधारणा के विभिन्न प्रयोग

'रूढ़िवाद' क्या है अथवा रूढ़िवादियों का विश्वास किन-किन तथ्यों में हैं - ऐसे प्रश्नों के उत्तर से अधिक सरल यह बताना है कि इसका ऐतिहासिक संदर्भ क्या रहा है। 750 ई. से 1850 ई. के बीच हुए व्यापक परिवर्तनों के बदले में रूढ़िवाद एक अनुक्रिया के रूप में उभरा है। कभी-कभी रूढ़िवाद का अर्थ सभी तथा प्रत्येक प्रकार के परिवर्तन के विरुद्ध एक विरोध के रूप में लिया जाता है; कभी इसका अर्थ किसी पहले के समय में बने समाज के पुनःनिर्माण हेतु लिया जाता है, जबकि कोई अन्य विचारक रूढ़िवाद को प्रारंभिक रूप से एक राजनीतिक प्रतिक्रिया तथा द्वितीयक, विचारों के एक समूह के रूप में देखता है।

क्लिंटन रॉस्सीटर के अनुसार, रूढ़िवाद "एक ऐसा शब्द है, जिसकी उपयोगिता मात्र उसकी प्रत्याख्यान, विरूपण तथा प्रकोपन से ही जोड़ी जा सकती है।" वह आगे लिखता हैः "क्योंकि जिन विचारों व क्रियाओं का रूढ़िवाद बोघ देता है, वे वास्तविक तथा स्थायी होते हैं और क्योंकि इसके विकल्प को सामान्यतया स्वीकार नहीं किया जाता, इसलिए रूढ़िवाद की लम्बी आयु पर किसी को कोई सन्देह नहीं है। द्वितीय विश्व युद्ध के समय से रूढ़िवाद का उपयोग अनेक अर्थों में किया जाता है''।

21.3.1 स्वभावगत रूढ़िवाद

एक परिभा-ाा के अनुरूप रूढ़िवाद एक विधिवत् जीवन तथा कार्य-संचालन शैली के विरुद्ध परिवर्तनों को रोकने हेतु एक प्राकृतिक एवं सुसांस्कृतिक प्रवृति है। रॉस्सीटर के अनुसार, "रूढ़िवाद, प्रभावी रूप से, एक स्वभावगत एवं मनोवैज्ञानिक अवस्थिति है; विशे-ताओं का एक समूह जो सभी समाजों में अधिकांश लोगों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। वे रूढ़िवादी स्वभाव के आवश्यक तत्वों को इस प्रकार बताते हैंः *अभ्यस्तता* (समाज का व्यापक उड़ान चक्र तथा उसका बहुमूल्य रूढ़िवादी एजेन्ट); *जड़त्व* (एक ऐसी शक्ति जो भौतिक संसार में जितनी सशक्त होती है, उतनी सामाजिक संसार में भी); *भय*

(अप्रत्याशित, अभिभ्रमित तथा क-टदायक तथ्यों से); *स्पर्धा* (समूह के अलगाव के डर तथा उन के समर्थन के प्रति लालसा से उत्पन्न व्यवस्था से जुड़ी)। अतः हम निर्धन, वृद्ध तथा अनभिज्ञ के रूढ़िवाद के वि-ाय में थोड़ा-बहुत कह-सुन सकते हैं।" रॉस्सीटर कहता है, "इसके साथ साथ, सामाजिक अस्तित्व के पैटर्न तथा सामाजिक प्राप्ति के संदर्भ में रूढ़िवादी स्वभाव को उच्च मूल्य प्रदान किए जाने चाहिए।"

21.3.2 स्थितिगत रूढ़िवाद

एक दूसरी परिभा-ाा के अनुरूप, रूढ़िवाद, पहली परिभा-ाा से सम्बन्धित, एक ऐसी अभिरुचि है जो सामाजिक, आर्थिक, कानूनी, धार्मिक, राजनीतिक अथवा सांस्कृतिक व्यवस्था में विध्वंसीय परिवर्तनों का विरोध है। रॉस्सीटर स्प-ट करते हुए कहता है कि ''रूढ़िवाद थोड़ा-बहुत सादे रूप से परन्तु उनके साथ-साथ प्रभावी रूप से सामाजिक व्यवहार की एक शैली है, सिद्धान्तों तथा पूर्वाग्रहों का एक समूह है, जो तभी विकसित समाजों में अधिकांश लोगों द्वारा प्रतिदिन प्रदर्शित होता रहता है।" इस रूढ़िवाद का प्रभेदक लक्षण परिवर्तन का भय है, जो राजनीतिक क्षेत्र में परिवर्तित हो जाता है और जैसे कि रॉस्सीटर कहता है, "आमूलवाद के भय में परिवर्तित हो जाता है। यह आमूलवाद/विप्लववाद उन लोगों से सम्बन्धित है जो पुराने मूल्यों, संस्थाओं तथा जीवन-स्तर की शैलियों को न-ट कर नए विश्व-व्यवस्था की रचना का सुझाव देते हैं।"

स्थितिगत रूढ़िवाद मात्र संभ्रात व्यक्तियों तक ही सीमित नहीं है। इसका विस्तार उन सभी लोगों तक है, जो यथास्थिति में परिवर्तन पर खेद व्यक्त करते हैं।

यह र्दुभाग्य है कि स्वभावगत रूढ़िवाद तथा स्थितिगत रूढ़िवाद दोनों को सत्तावाद, अंधकारवाद, नस्लवाद, फासीवाद, अलगाववाद, असमंजन तथा बन्द-व्यवस्था आदि से जोड़ा जाता है। रूढ़िवाद को इनमें से किसी के साथ जोड़ने से पहले अध्ययन व शोध की आवश्यकता है।

21.3.3 राजनीतिक रूढ़िवाद

एक अन्य परिभा-ाा के अनुरूप, रूढ़िवाद उन राजनीतिक दलों तथा आन्दोलनों की आकांक्षाएँ तथा क्रियाएँ (जो अधिकांशतः सृजनात्मक की अपेक्षा प्रतिरक्षात्मक हैं) हैं, जो विरासत में प्राप्त नैतिकता के पैटर्न तथा सिद्ध संस्थाओं को मान्यता देते हैं। यह दल तथा आन्दोलन की नम्र वामपंथियों के सुधारात्मक योजनाओं तथा उग्र वामपंथियों की परियोजनाओं का विरोध करते हैं।

राजनीतिक रूढ़िवाद एक ऐसा तत्व है, जो संगठित समाज को सार्वभौम तथा तत्कालीन स्थापित समाज को अनिवार्यतः सुरक्षित मान्यता प्रदान करता है। प्रतिक्रिया रूढ़िवाद नहीं है। यह उन लोगों की स्थिति है, जो भवि-य की अपेक्षा अतीत की अत्यधिक प्रशंसा करते हैं तथा जो यह महसूस करते हैं कि अतीत में वापसी प्रयास योग्य हैं। रूढ़िवादी व्यक्ति अनिवार्यतः विश्राम की स्थिति में होता है; सामान्यतया ऐसा व्यक्ति ''उस संसार के प्रति जिसे उन्होंने नहीं बनाया होता'', मानसिक, मनोवैज्ञानिक एवं व्यवहारिक रूप से सामंजस्य की स्थिति में होता है। प्रतिक्रियावादी सदैव गति की अवस्था में होता है तथा जैसा कि रॉस्सीटर कहते हैं, ''ऐसा व्यक्ति उस स्थिति को स्वीकार करने से इंकार करता है, कि जो स्थापित हो चुका है वे सदैव अच्दा तथा सहनीय होता है; ऐसा व्यक्ति कुछ कुरेदना चाहता है, कुछ संस्थाओं को क्षतिग्रस्त करना चाहता है, अपने रा-ट्र के संविधान में संशोधन तक करना चाहता है; वह सामाजिक प्रक्रिया को उस समय तक वापस ले जाना चाहता है, जब उनके देशवासियों ने मूर्खता के कारण गलत मार्ग अपना लिया था।"

यह नहीं समझा जाना चाहिए कि पुनर्संस्थापक सदैव रूढ़िवादी होता है, यद्यपि दोनों में बहुत कुछ एक समान जाता है। पुनर्संस्थापक के रूप में एक रूढ़िवादी विभ्रमकारी होता है तथा एक क्रान्तिकारी के रूप में वह समय समय पर उत्तेजित हो सकता है। परन्तु ऐसा सोचना बहुत दूर की सोच है। एक रूढ़िवादी, क्रान्तिकरी की अपेक्षा, व्यवस्था-प्रेमी होता है, जिसकी दृ-टि में चरमराते समाज का कोई स्थान नहीं होता।

रूढ़िवादी पुनर्संस्थापक इस दृ-टि से होता है कि वह परम्पराओं, रीति-रिवाज़ों, नैतिकता, इतिहास तथा पुरानी संस्थाओं की दुहाई देता है। वह क्रान्तिकारी इस दृ-टि से है कि वह अपने आपको उदारवादी तथा समाजवादी-मार्क्सवादी प्रयोजनों से सुरक्षित किए जाने के लिए ज़ोरदार प्रयास करता है। वह उदारवाद इस दृ-टि से है कि वह अपने मूल्यों को चुनौती दिए जाने की अनुमति नहीं देता है। वह प्रतिक्रियावादी इस दृ-टि से है कि उनके सिद्ध नैतिक सिद्धान्त इतिहास में निहित होते हैं। रॉस्सीटर लिखते हैं, "रूढ़िवादी एक उदारवादी की भाँति तर्क देता है तथा विभेदीकरण करता है; एक आमूलवादी की भाँति संयोजित करता है तथा दाँव लगाता है। एक सुधारवादी की भाँति रूढ़िवादी दक्षिण-पंथी राजनीतिज्ञ के रूप में कल्याणकारी विधायन के क्षेत्र में उदारवादियों से भी अधिक सब्ज़ बाग़ दिखाता है और उस दृ-टि से अपने स्वरूप में ज़ाहिर है, अपने अनुरूप नहीं होता। रूढ़िवादी परम्परावादी रहते हुए टूटते समुदाय की संस्थाओं तथा मूल्यों को विक्षपकारी उत्साह से बनाए रखने का प्रयास करता है तथा इन सभी रूपों में वे कुछ भी बन पाता हो, रूढ़िवादी नहीं रह पाता है।"

21.4 रूढ़िवादः उसकी [kk] विशे-ताएँ

एडमण्ड बर्क ने कहा था कि "संरक्षण की इच्छा" रूढ़िवादी विचारधारा का एक अंतर्निहित सार है, यद्यपि 'संरक्षण' रूपी लक्ष्य की प्राप्ति को सभी रूढ़िवादी एक समान महत्वपूर्ण नहीं मानते। सत्तावादी रूढ़िवाद प्रायः प्रतिक्रियावादी है। यह या तो परिवर्तन के प्रति झुकाव को स्वीकार नहीं करता या समय को पुनः वापस लाने का प्रयास करता है। क्रान्तिकारी रूढ़िवाद विल्पववादी रूढ़िवाद शब्द का प्रयोग कर सकता है तथा क्रान्तिकारी स्वरूप के रूढ़िवादी संरचना की प्राप्ति, उसकी पुनःस्थापना अथवा उनके लिए ज़ोरदार तर्क का समर्थन करता है। रूढ़िवाद की खास विशे-ताओं को, जैसे कि वह विभिन्न रूपों में विकसित होती है तथा जैसे वह अपनी मौलिकताओं को प्रदर्शित करती हैं, उनको इंगित किया जा सकता है।

21.4.1 इतिहास तथा परम्परा

किसी भी प्रकार के रूढ़िवाद के लिए इतिहास तथा परम्परा को मौलिक मानना लगभग अनिवार्य होता है। इतिहास का दूसरा नाम अनुभव है। यह मानवीय सम्बन्धों के मामलों में निगमनात्मक चिन्तन है। वैधता इतिहास की कृति है। मैनहीम लिखते हैं "रूढ़िवादी के रूप में तथ्यों का विश्वसनीय रूप में देखना मानो ऐसा है, जैसे कोई अतीत में घटनाओं को अनुभव कर रहा हो।" सही इतिहास सीधे तथा ऐतिहासिक ढंग की अभिव्यक्ति नहीं है, अपितु, पीढ़ी दर पीढ़ी विकसित संरचनाओं, समाजों, आदतों तथा पूर्वाग्रहों का अस्तित्व है। इतिहास अथवा मनु-य की सत्यता पर अड़े रहना रूढ़िवादी तत्व है। बर्क, राऊरक, ऑकशॉट तथा वोगालिन आदि विद्वानों ने ऐसे ही कुछ तथ्यों/तत्वों पर बल दिया है। सामाजिक वास्तविकता को एक ऐतिहासिक दृ-टिकोण से ही समझा जा सकता है। "हम नहीं जानते कि हम कहाँ हैं; हम यह तो कम जानते हैं कि हम कहाँ जा रहे हैं, जब तक कि हम यह नहीं जानते

कि हम कहाँ गए थे। यह ही इतिहास की रूढ़िवादी विचारधारा की आधारभूत स्थिति है।" (*कनज़रवेटिट्ज़मः ड्रीम एण्ड रियलटी*)।

इतिहास का परम्पराओं द्वारा प्रतिनिधित्व प्रदर्शित होता है तथा परम्पराएँ इतिहास का एक मुख्य घटक हैं। इस दृ-टि से रूढ़िवाद का मुख्य सार, इतिहास के संदर्भ में, परम्पराओं की रक्षा तथा स्थापित रीति-रिवाज़ों व संस्थाओं को बनाए रखना, उसकी प्रबल इच्छा है। बर्क परम्पराओं की बात कर रहा थे जब उन्होंने समाज को "उन लोगों की जो मर चुके हैं, तथा उन लोगों की जो जीवित हैं तथा उन लोगों की जो पैदा होंगे, की साझेदारी बताया था।" चैस्टरटन ने कहा है कि ''परम्परा मृतों का लोकतंत्र है''। इस दृ-टि से, परम्परा अतीत की जमा बुद्धि का प्रदर्शन होता है। अतीत की संस्थाएँ तथा व्यवहार समय की कसौटी द्वारा सिद्ध तत्व हैं। अतः रूढ़िवादी माँग करते हैं कि ऐसी संस्थाएँ व व्यवहार उनके लिए जो जीवित हैं तथा उन पीढ़ियों के लिए जो आने वाली हैं, के लाभ हेतु उन्हें बनाए रखना चाहिए।

21.4.2 मानवीय अपूर्णता, iokxg तथा विवेक

रूढ़िवाद मानवीय अपूर्णता का दर्शन हैः मनु-य के आधार की जड़ें विवेक में न होकर, पूर्वग्रह में होती हैं। उदारवादियों की सोच के विपरीत जो लोगों को नैतिक, विवेकीय तथा सामाजिक बताते हैं, रूढ़िवादी लोगों को अपूर्ण तथा अपूर्णीयतता का प्रतीक समझते हैं। रूढ़िवादियों का विश्वास है कि लोग आश्रित जीव हैं, सदैव अकेलेपन तथा अस्थिरता से भयग्रस्त रहते हैं और इस कारण स्थिरता तथा सुरक्षा की माँग करते हैं; उन्हें वह पसंद होता है, जो परिचित होता है तथा सामाजिक व्यवस्था के लिए सदैव स्वतंत्रता की कुरबानी करने के लिए तत्पर रहते हैं। रूढ़िवादियों का मानना है कि लोग अपने स्वभाव के कारण अमूर्त विचारों में संदेह व्यक्त करते हैं तथा अपने विचारों को अनुभव व वास्तविकता पर आधारित रखते हैं। उनके मन-मस्ति-क में अतीत की सहायता से बनी व पनपी एक संरचना रहती है - एक पूर्वाग्रही संरचना। निस्बत के अनुसार, ''रूढ़िवादी प्रतिकूलता में एक तात्विक बुद्धि देखते हैं, ऐसी बुद्धि जो प्रज्ञात्मकता के पूर्ववर्त होती है। प्रतिकूलता किसी भी आपात् स्थिति के लिए तैयार नुस्खा होती है, जो अतीत में मस्ति-क को बुद्धि व गुणों से ओत-प्रोत रखती है और जो निर्णय, संशय, दुविधा तथा अनिश्चितता में व्यक्ति को हिचकिचाहट की स्थिति में नहीं छोड़ती''। विवेक ज्ञान से निकलता है, जो प्राप्त अधिक होता है और सीखा कम जाता है। रूढ़िवादियों का विचार है कि प्राप्त ज्ञान अमूर्तता तथा अमूर्त ज्ञान को जन्म देता है तथा लोगों के लिए इस पूर्ण रूप से समझना कठिन होता है। सीखा गया ज्ञान अनुभव में पनपता है तथा कुछ करने तक सीमित रहता है तथा गलतियों के माध्यम से सीखने तक सीमित होता है। ऐसा ज्ञान नियमों व सामान्यताओं का ज्ञान नहीं होता, परन्तु ऐसा ज्ञान होता है, जो एक व्यक्ति के अनुभव से निकलता है तथा दूसरे के रक्त में रिस जाता है। विवेक को ज्ञान समझना रोग का इलाज़ नहीं होता, अपितु रोग से भी अधिक दू-ित तत्व है, एक ऐसा तत्व जो इलाज़ को भी रोगग्रस्त बना देता है।

21.4.3 जैविक समाज, स्वतंत्रता तथा समानता

रूढ़िवादियों के लिए समाज का स्वरूप जैविक हैः व्यक्ति समाज से बाहर नहीं रह सकते; समाज के बिना व्यक्तियों का कोई वजूद नहीं होता, वे समाज के अन्दर उनके अटूट अंग होते हैं तथा समाज से जुड़े रहते हैं। व्यक्ति सामाजिक समूहों के अंग होते हैं और यह सामाजिक समूह व्यक्तियों को न केवल सुरक्षा देते हैं, अपितु उन्हें एक अस्तित्व भी प्रदान करते हैं। स्वतंत्रता के वि-ाय में रूढ़िवादियों की धारणा यह है कि स्वतंत्रता का अर्थ व्यक्ति को उनके हाल पर अकेले छोड़ना नहीं होता, अपितु

इसका अर्थ उसे उनके सामाजिक दायित्वों व बन्धनों के साथ जोड़ना होता है। रूढ़िवादियों के लिए स्वतंत्रता का अर्थ, प्रारंभिक रूप में, लोगों को उनके कर्त्तव्यों का पालन कराना होता है। उदाहरणार्थ माता-पिता अपने बच्चों को एक विशे-ा रूप से कार्य करने अथवा बर्ताव करने के लिए कहते हैं, तो वह उनकी स्वतंत्रता को किसी भी रूप से कम नहीं करते; ऐसा कर के, माता-पिता बच्चों की स्वतंत्रता को एक आधार, एक निर्देश तथा एक दिशा प्रदान करते हैं, ताकि जब वे बड़े हों, तो वे स्वतंत्रताओं का सही आनन्द ले सकें। रूढ़िवादियों की स्वतंत्रता की अवधारणा न तो सारहीन है और न ही आधारहीन- वस्तुतः रूढ़िवादी ऐसा ही सोचते हैं। यह कर्तव्यों के पालन के साथ साथ अधिकारों के आनन्द लेने का नाम है।

समाज के वि-ाय में रूढ़िवादियों की सोच यह है कि समाज अपने आपमें एक जीव है - एक ऐसी जैविक संस्था, जिसके सदस्य न तो एक समान हैं और न ही एक जैसे हैं; वे एक जैसा काम भी नहीं करते परन्तु इसके बावजूद वह समाज रूपी मानवीय शरीर को प्रभावपूर्ण रूप से काम करने में योगदान देते हैं। जैविक समाज का प्रत्येक अंग (परिवार, सरकार, फैक्टरी आदि) समाज को बनाए रखने में अपना अपना विशे-ा कार्य करता है। हैवुड कहते हैं, "यदि समाज जैविक है, तो उसकी संरचना तथा उसकी संस्थाएँ प्राकृतिक शक्तियों द्वारा आकृत होती हैं, तथा उसका ढाँचा विशे-ातायों द्वारा जो उसमें रहते हैं, बनाए रखा जाए तथा उसका विधिवत रूप से आदर किया जाए।"

रूढ़िवादियों का जैविक समाज का रूप एक ऐसी एकता का नाम है, जो विविधताओं द्वारा बनती है। ऐसा समाज एक सीढ़ीनुमा रूप का होता है, जहाँ स्वतंत्रता प्रभावपूर्ण तरीके से काम करती है तथा उस रूप में उसका कोई मतलब भी होता है। ऐसे विविधता पूर्व जैविक समाज में समानता का कोई स्थान नहीं होता। समानता के विभिन्न रूप व्यक्तियों तथा समूहों की स्वतंत्रताओं को जोखिम में डाल देते हैं - स्वतंत्रताएँ जो अंतर्निहित विविधताओं से अलग नहीं होतीं, विभिन्नताओं से पृथक नहीं होतीं तथा परिवर्तीय अवसरों से परे नहीं होतीं (निस्वत)। इस संदर्भ में बर्क कहते हैंः "जो लोग समतल बनाने का प्रयास करते हैं, वह कभी समानता नहीं लाते।"

21.4.4 सत्ता तथा शक्ति

जिस रूप में सत्ता तथा शक्ति का सामान्यतः प्रयोग किया जाता है, रूढ़िवादियों के लिए दोनों में अनेक समानताएँ हैं। शक्ति उनके द्वारा प्रयोग में लायी जाती है, जिसके पास उनके प्रयोग की अधिकाधिक सत्ता होती है। शक्ति उनके पास वह कानूनन अधिकार है, जो कुछ करने की शक्ति रखता है। किसी भी जैविक एवं सुसंगत समाज में व्यवस्था को बनाना अनिवार्य होता है। अतः ऐसे समाज के लिए शक्ति एक अनिवार्य अंग हैं। अधिश्रयिक समाज में अनेक स्तर होते हैं; अतः सत्ता का होना अनिवार्य होता है। रूढ़िवादी दर्शन में सत्ता तथा शक्ति महत्वपूर्ण अवधारणाएँ हैं। स्वतंत्रता के लिए, सत्ता व शक्ति कोई बाधा नहीं होते - कम से कम रूढ़िवादी तो ऐसा सोचते हैं। बर्क ने कहा है, "मेरे लिए स्वतंत्रता केवल वह स्वतंत्रता होती है जो व्यवस्था के साथ जुड़ी होती है, जिसका अस्तित्व केवल व्यवस्था तथा क्षमता से सम्बन्धित होता है और जो इसके बिना हो ही नहीं सकती।" रूढ़िवादियों का विश्वास है कि समाज की भाँति सत्ता का भी प्राकृतिक रूप से विकास होता है; सत्ता कार्यों से उभरती है। उनका कहना है कि सत्ता तथा शक्ति प्राकृतिक समाज से विकसित होते हैं। यह प्राकृतिक इसलिए होते हैं कि यह समाज व दूसरी सामाजिक संस्थाओं के स्वरूप में बद्धमूल होते हैं। स्कूल परिसर में सत्ता तथा शक्ति अध्यापक द्वारा प्रयोग की जानी चाहिए; काम के स्थान पर, काम के स्वामी द्वारा तथा समाज में सरकार द्वारा शक्ति/सत्ता का प्रयोग किया जाना चाहिए। रूढ़िवादी कहते हैं कि सत्ता का

होना इसलिए ज़रूरी है, क्योंकि यह उपयोग होती हैः इससे लोगों को निर्देशन, समर्थन तथा सुरक्षा प्राप्त होती है तथा लोग जानते हैं कि वे कहाँ हैं तथा उनसे क्या अपेक्षित किया जा रहा है। यही कारण है कि सभी रूढ़िवादी नेतृत्व तथा अनुशासन पर बल देते हैं। हैवुड कहते हैंः "नेतृत्व किसी भी समाज में एक मुख्य संघटक है, क्योंकि इसमें निर्देशन देने तथा दूसरों को उत्साहित करने की क्षमता होती है; अनुशासन सत्ता के लिए स्वास्थ्य वर्धक तथा ऐच्छिक सम्मान होता है।"

कोई भी रूढ़िवादी समानता में विश्वास नहीं रखता; सामाजिक समानता में तो बिल्कुल भी नहीं। वे कहते हैं कि लोग असमान इस दृ-टि से पैदा होते हैं कि उनकी क्षमताओं तथा निपुणताओं में प्राकृतिक रूप में विभाजन बना रहता है। असमानों के लिए व्यवहार समान नहीं होना चाहिए। रूढ़िवादियों की मान्यता है कि असमानता अपेक्षाकृत अधिक गहरे रूप से जड़ तक फैली होती है। वास्तविक सामाजिक समानता, रूढ़िवादियों का मत है, मात्र एक मिथक है।

रूढ़िवाद शक्ति को इसलिए पसंद करता है, क्यूँकि इससे समाज में व्यवस्था की स्थापना संभव हो पाती है। वह सत्ता को इसलिए सम्मान देता है कि इससे समाज में व्यवस्था पनपती रहती है। रूढ़िवादी एक सत्तावादी तथा सर्वशक्तिमान राज्य का पक्ष लेते हैं। सार्वजनिक व्यवस्था तथा समाज का नैतिक ढाँचा राज्य की शक्ति तथा सत्ता द्वारा ही कायम किया जा सकता है। हैवुड कहते हैं, "इस के अतिरिक्त, रूढ़िवाद की विचारधारा के अंतर्गत एक सशक्त पितृवादी परम्परा है, जो सरकार को समाज में एक पिता का दर्जा प्रदान करती है।"

21.4.5 सम्पत्ति तथा जीवन

रूढ़िवादियों के लिए सम्पत्ति का अपना एक विशे-ा महत्व है। उनका मत है कि सम्पत्ति का एक व्यापक मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक लाभ होता है; यह सुरक्षा प्रदान करती है; लोगों में आत्म-विश्वास पैदा करती है; सामाजिक मूल्यों को प्रोत्साहित करती है। अतः रूढ़िवादियों की यह माँग रही है कि सम्पत्ति को अव्यवस्था तथा अराजकता से सदैव सुरक्षित रखा जाना चाहिए। वे कहते हैं कि सम्पत्ति वालों का ही समाज में कुछ दाँव पर होता है। समाज में कानून तथा व्यवस्था के बने रहने तथा बनाए रखने में उनकी विशे-ा रुचि होती है। सम्पत्ति स्वामित्व कानून, सत्ता तथा सामाजिक व्यवस्था को सम्मानित करने के रूढ़िवादी मूल्यों को प्रोत्साहित करता है। हैवुड लिखते हैं, "एक अधिक तथा गहन निजी कारण जिसके फलस्वरूप रूढ़िवादी सम्पत्ति का समर्थन क्यों करते हैं, वह यह है कि वे सम्पत्ति को व्यक्तिगत स्वतंत्रता एक विस्तार मानते हैं, लोग अपने आपको उनमें जो उनके पास है महसूस भी करते हैं तथा देखते भी हैं।"

बर्क ने लिखा है कि 'यह सम्पत्ति का अपमान था जिसके कारण अन्य त्रुटियों ने जन्म लिया तथा फ्राँस की 1789 की क्रान्ति हुई और इस कारण पूरे यूरोप में खतरा मंडराने लगा।'

रूढ़िवाद सम्पत्ति की पवित्रता की वकालत करता है। रस्सल कर्क लिखते हैं कि ''प्रत्येक वास्तविक रूढ़िवादी के मन में यह धारणा सदैव पनपती रहती है कि सम्पत्ति तथा स्वतंत्रता अटूट रूप से जुड़े होते हैं; समस्त आर्थिक स्पाटता आर्थिक विकास नहीं होता; सम्पत्ति को निजी स्वामित्व से अलग कर दीजिए, स्वतंत्रता न-ट हो जाएगी''। इरविंग बैब्बिट ने कहा है, "सभी प्रकार का सामाजिक न्याय अधिहरण है; बड़े पैमाने का अधिहरण नैतिक मानकों की अवमानना करता है तथा उस सीमा तक वास्तविक न्याय को चालाकी के कानून तथा बल के कानून के अधीन कर देता है।"

21.4.6 धर्म तथा नैतिकता

प्रमुख विचारधाराओं में रूढ़िवाद इस दृ-टि से विचित्र है कि यह धर्म तथा नैतिकता पर अधिक बल देती है। अपने नामकरण के भेद-विभेद के बावजूद, सभी रूढ़िवादियों जैसे हेगल, हैलर तथा कोलारिज आदि ने धर्म तथा नैतिकता को राज्य तथा समाज का मूल सिद्धान्त बताया।

धर्म तथा नैतिकता के लिए रूढ़िवादी समर्थन का मुख्य आधार इस विश्वास के साथ जुड़ा हुआ है कि जनमानस जब रूढ़िवादिता से दूर हो जाता है, तो वह पागलपन से ग्रस्त तथा संतुलन को खो बैठता है। बर्क ने अपने पुत्र को लिखा थाः "धर्म एक अबोध्य तथा विपरीत संसार से हटते हुए लोगों को एक दूसरे से बाँधता है।" ताकविल ने अपनी मृत्यु के समय माना था कि ''सरकार, समाज तथा स्वतंत्रता के लिए धर्म तथा नैतिकता का क्या मूल्य होता है। धर्म और विशे-ा रूप से राजनीति में जब धर्म के सिद्धान्त व नियम नहीं होते, लोग बेलगाम स्वतंत्रता के प्रकोप से भयभीत हो जाते हैं। मेरे लिए यह एक सन्देह का तथ्य है कि क्या व्यक्ति सम्पूर्ण धार्मिक स्वतंत्रता तथा समस्त राजनीतिक स्वतंत्रता का एक साथ एक समय समर्थन कर सकते हैं? मैं यह सोचने के लिए विचार अवश्य कर सकता हूँ कि यदि व्यक्ति में विश्वास की कमी है, तो उसे परतंत्र के रूप में रहना चाहिए और यदि वह स्वतंत्र है, तो उसे विश्वास करना चाहिए।"

धर्म एक आध्यात्मिक तत्व है। परन्तु साथ ही, वह एक अनिवार्य सामाजिक सीमेन्ट भी है। रूढ़िवादियों के लिए धर्म तथा रूढ़िवाद में एक घनि-ठ सम्बन्ध हैः धर्म समाज को एक नैतिक आधार/ढाँचा प्रदान करता है।

21.5 कुछेक प्रतिनिधिक रूढ़िवादी

रूढ़िवाद से जुड़े तर्क को पूरा करने हेतु कुछेक रूढ़िवादियों का वर्णन करना अनिवार्य सा बन जाता है। इन रूढ़िवादियों में बर्क व ऑकशॉट का विवरण देना रुचिकर होगा।

i) बर्क द्वारा रचित पुस्तक *रिफ्लैक्शिन्स ऑन द रेवुल्युशन इन फ्रांस* को आधुनिक रूढ़िवाद की एक सुनिश्चित व आधारभूत कृति कहा जा सकता है। इस रचना में बर्क ने विप्लपकारी सुधारों को अमूर्त सिद्धान्तों पर आधारित होने के कारण विरोध किया था, तथा स्थापित एवं विकसित संस्थाओं के बने रहने का एक सुदृढ़ तर्क प्रस्तुत किया था। अतीत में आस्था, वर्तमान की प्रशंसा, नव-प्रणाली का विरोध, मानव-स्वभाव का गौण स्वरूप, समाज के परम्परावादी दृ-टिकोण में विश्वास, सम्पत्ति वालों के लिए सहानुभूति आदि ऐसे तथ्य हैं, जो बर्क को एक रूढ़िवादी विचारक बनाते हैं। कॉबान (पुस्तक का नाम *एडमण्ड बर्क*) ने कहा हैः "लॉक तथा विग राजनीतिज्ञों का शि-य होने के बावजूद, बर्क 18वीं शताब्दी के विचारकों से पूर्णतः अलग विचारक था। उस युग में जब कि आधुनिकता की प्राचीनता पर विजय हो चुकी थी, बर्क अतीत का पुजारी ही बना रहा, विवेक के इस महान युग में बर्क अविवेकता का दार्शनिक था।"

बर्क का रूढ़िवाद उसकी सभी रचनाओं व लेखों में प्रदर्शित होता है। एक सिद्धान्त के रूप में रूढ़िवाद के तीन वैविध्य होते हैंः (क) *यथास्थिति* : यह वह रूप है, जिसके अंतर्गत जो तत्व जैसे हैं, वैसा ही बने रहते हैं। हर समाज में ऐसे लोग होते हैं, जो तथ्यों/वस्तुओं को अपनी पहले जैसी स्थिति में बने रहने पर ज़ोर देते हैं तथा किसी भी प्रकार के परिवर्तनों का समर्थन नहीं करते;

यथास्थिति के समर्थक होते हैं; यथास्थिति में उन्हें कुछ खोना नहीं पड़ता। संगठनात्मक रूढ़िवादः वे लोग जो वे अपने हितों की सुरक्षा, प्रोत्साहन तथा प्रतिरक्षा हेतु विभिन्न तरीकों व साधनों को तलाशते हैं। इस प्रकार संगठनों के महत्व को समझा जा सकता है; इन संगठनों के माध्यम से हितों का संरक्षण होता है तथा यथास्थिति को बनाए रखने के प्रयास किए जाते हैंः जो संगठनात्मक होता है, वह अपने स्वरूप में रूढ़िवादी होता है; जाने वाले कल के विचार आज के आन्दोलन का रूप धारण कर लेते हैं तथा आज का आन्दोलन आने वाले कल का संगठन बन जाता है; (ग) *दार्शनिक रूढ़िवादः* एक बार जब यथास्थिति में रुचि का संस्थापन हो जाता है तथा उस कारण संगठन को बनाना आवश्यक हो जाता है, तब उनके अनुरूप विचारधारा भी बन जाती है - एक ऐसी विचारधारा जो यथास्थिति रूपी हित के चारों ओर बनी रहती है, उसकी रक्षा हेतु तर्क प्रस्तुत करती है। एक विचारधारा के रूप में रूढ़िवाद यथास्थिति रूपी हितों की सुरक्षा तथा उनको प्रोत्साहन देने का तर्क प्रस्तुत करता है।

अपनी रचनाओं में बर्क उपर्युक्त तीनों वैविध्यों से गुज़रे हैं। यथास्थिति के समर्थक के रूप में बर्क संसदीय प्रणाली, रा-ट्रीय हितों से ओत-प्रोत राजनीतिक दलों रूपी संगठनों के निर्माण पर ज़ोर देता है। अपने रूढ़िवाद रूपी दायरे में बर्क सुधारवाद की बात करता है। बर्क के आते आते इंग्लैण्ड की विग पार्टी आक्रमणकारी स्थिति में थी। परन्तु उनके रहते विग पार्टी की सामाजिक विचारधारा में आक्रमण से हटकर बचाव के तत्व की ओर बदलाव आने लगा।

ii) ऑकशॉट द्वारा परम्परावाद के लिए तर्क राजनीति, नैतिकता तथा जीवन के क्षेत्र में रूढ़िवादिता के एक रूप में उनके द्वारा विवेकवाद की समीक्षा के फलस्वरूप उभरा है। ऑकशॉट के अनुसार, राजनीति में वैचारिक शैली (दूसरे शब्दो में विवेकीय शैली) एक संभ्रम शैली है। उनका मत है कि विवेकीय परियोजना में विचारधारा मात्र एक संक्षिप्त है, मात्र एक अनुक्रमिका है। अतः ऑकशॉट का मत है कि यदि कोई शैली है, अथवा किसी शैली को अपनाना है तो वह केवल परम्परावादी शैली है। ऑकशॉट बल देता है कि कोई भी राजनीतिक कृति व्यवहार के वर्तमान परम्पराओं से ही निकल सकती है तथा इन परम्पराओं में निहित व्यवस्थाओं में संशोधन ही उस राजनीतिक कृति का कार्य हो सकता है। उन के अनुसार, सभी कृतियाँ अपने स्वरूप में परम्परा-गत स्वरूप की होती है। ऑकशॉट बताते हैं कि प्रत्येक विचार, प्रत्येक आदर्श, प्रत्येक विचारधारा (भले वह कितनी ही विप्लववादी क्यों न हो) पारम्परिक होते हैं, सदैव एक अनुक्रमणिका, एक संक्षिप्तत्ता की भाँति जो समाज की व्यवस्थाओं की आवश्यकताओं की पूर्ति अनुरूप पारम्परिक स्वरूप के होते हैं।

ऑकशॉट के तर्क को अभिव्यक्त करते हुए मीनॉग कहते हैंः "राजनीतिक गतिविधि कोई आवेग नहीं है और न ही यह किसी अंतर्निहित विचार का निर्माण है। यह तो प्रज्ञापन का प्रयास है। प्रज्ञापन तर्कपूर्ण अंतर्निहित विचारों तथा अव्याख्येय घटनाओं की अतियों के बीच का एक मार्ग होते हैं।" मीनांग ऑकशॉट के समाधान की ओर संकेत करते हुए कहते हैंः "राजनीति को सदैव पारम्परिक रूप से देखा जाना चाहिए; पारम्परिक से अभिप्राय है, ऐतिहासिक रूप से समझना।"

ऑकशॉट का मत है कि परम्परा कुछ करने का कोई निश्चित रूप का प्राचीन तरीका नहीं है; यह तो एक प्रवाह है। उनके लिए प्रत्येक प्रकार की राजनीतिक कृति परिणामी वृति है, 'प्रज्ञापन की प्राप्ति' जैसा कि वे कहता है। उनके अनुसार, इसका अर्थ यह है कि राजनीतिक कृति वह है जो वह वास्तविक रूप में है, न कि वह जो वह हो सकती है, अथवा वह जो उसे होना चाहिए। यह

वह है जो कुछ करने में सफल होती है। ऑकशॉट कहते हैं कि वह जो क्रान्तिकारी अर्थात् आदर्शवादी क्रियाओं को करने का प्रयास करते हैं, वे केवल अपने आपको धोखा देते हैं। ऑकशॉट के शब्दों में, "राजनीतिक कृति में लोग अबंधित तथा बिना-आधार के समुद्र में तैरते हैं, जहाँ कोई रहने के लिए पतन नहीं होता और न ही कोई ठहरने के लिए फर्श; जहाँ न तो कोई प्रारंभ होता है और न ही कोई सुनिश्चित मंज़िल। प्रयास मात्र जलयान पर तैरते रहना होता हैः समुद्र एक ऐसा मित्र भी होता है, शत्रु भी, जहाज़रानी की कला मात्र इस प्रकार की होती है कि प्रत्येक विपरीत स्थिति को मैत्री-स्थिति में व्यवहार के पारम्परिक तरीकों रूपी संसाधनों में बदला जाए।"

ऑकशॉट राजनीति की पारम्परिक शैली को ही केवल कानूनपूर्ण शैली मानते हैं। अपने निबन्ध "आन बीइंग कनज़रवंटिव" में वह इस तथ्य पर बल देते हैं कि रूढ़िवादी होने का अर्थ है, अनजान की अपेक्षा परिचित को, अपरख की अपेक्षा परखयुक्त को, मिथक की अपेक्षा तथ्य को, संभावित की अपेक्षा वास्तविक को, दूर की अपेक्षा निकटतम को, पूर्णता की अपेक्षा सुविधाजनक को, स्वपनवादी आनन्दमयता की अपेक्षा वर्तमान हंसी को प्राथमिकता देना है। रूढ़िवादी होने का मतलब है, अपने भाग्य के अनुरूप रहना होता है, अपने साधनों के स्तर तक बने रहना होता है। ऑकशॉट कहते हैं कि स्थिरता सुधार की अपेक्षा सदैव लाभकारी होती है। वह परिवर्तन तथा नवप्रवर्तन को सन्देह की दृ-टि से देखते हैं। अतः वे कहते हैं कि लोगों को परिवर्तनों के वायदों के दावों को पुनः परखना चाहिए। यदि परिवर्तन के बिना कोई दूसरा उपाय नहीं है, तो ऑकशॉट छोटे व धीमे-धीमे परिवर्तनों का पक्ष लेते हैं। वे कहते हैं कि केवल उस सुधार को स्वीकारा जाए जो किसी त्रुटि का इलाज हो, अथवा जो असंतुलन को दूर करता हो।

बर्क की भाँति ऑकशॉट समाज को तर्क-वितर्क न मानते हुए उसे एक वार्ता समझते हैं। मीनाग लिखते हैं, "ऑकशॉट का यह विश्वास नहीं है कि वार्ता का अर्थ सत्य की तलाश है, यद्यपि कभी-कभी निःसन्देह ऐसा भी होता है। वस्तुतः वार्ता का मुख्य मुद्दा यह है कि इसमें मुद्दा होता ही नहीं है।" अतः इसमें अनेक तत्व/तथ्य/वस्तुएँ ऐसी आ जाएँगी जो विधानपालिका अथवा विचारगो-ठी अथवा वाद-विवाद में अपने आप ही निकल जाएँगी, अथवा असंगतिपूर्ण हो जाएँगी। ऑकशॉट स्वयं कहते हैं, "वार्ता में, जैसा कि जुआ खेलने में होता है, महत्वपूर्ण बात यह नहीं है कि कौन जीत रहा है अथवा कौन हार रहा है, महत्वपूर्ण यह होता है कि बाज़ी लगाई जा रही है।"

परम्परावाद में, ऑकशॉट के अनुसार, सब कुछ सम्मिलित है। जैसा कि वे कहते हैं, परम्परावाद निरंतरता है, यह स्थिरता है; यद्यपि यह गतिशील है, परन्तु, यह पूर्णतः संचलन की अवस्था में नहीं होती; यह कभी भी विश्राम की स्थिति में भी नहीं होती। ऑकशॉट कहते हैं कि परम्परावाद का सार जानने का मतलब कुछ भी न जानने के समान है; इसके ज्ञान का मतलब कुछ भी न जानने के समान है; इसके ज्ञान का मतलब है, इसकी विस्तृत जानकारी। परम्परावाद की ऑकशॉट की परिभा-ाा अति विस्तृत परिभा-ाा है, जिसका मतलब कुछ भी हो सकता है तथा कुछ भी नहीं हो सकता।

21.6 सारांश

रूढ़िवाद संरक्षण की विचारधारा है। इसका उदय पश्चिम में होने वाले आर्थिक व राजनीतिक परिवर्तनों के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया के रूप में हुआ था। यही कारण है कि रूढ़िवाद के किसी भी अर्थ में परिवर्तन की रोक सम्मिलित मानी जाती है। एक विचारधारा के रूप में, रूढ़िवाद अधिश्रेणिकता, परम्परावाद तथा व्यवस्था के मूल्यों का पक्ष लेता है तथा उदारवाद और समाजवाद से जुड़ी राजनीतिक चुनौतियों को जो उद्योगीकरण का परिणाम हैं उनका विरोध करता है। यही कारण है कि वामपंथियों तथा समाजवादियों, स्वतंत्रतावादियों तथा रूढ़िवादियों में मूल भेद पाया जाता है। वामपंथी और समाजवादी परिवर्तन का पक्ष लेते हैं, स्वतंत्रतावादी बाज़ार का तथा रूढ़िवादी परम्पराओं का।

रूढ़िवाद विचारधारा के अपने विशे-ा लक्षण होते हैंः परम्परा तथा इतिहास, मानवीय अपूर्णतः जिसमें प्रतिकूलता के प्रति स्नेह एवं विवेक के विरुद्ध संदेह होता है, असमानता तथा स्वतंत्रता सहित जैविक समाज, सत्ता एवं शक्ति के प्रति उत्साह, जीवन के अधिकारों व सम्पत्ति के लिए सशक्त तर्क तथा नैतिक एवं धार्मिक मूल्यों में विश्वास।

रूढ़िवाद का भवि-य उसकी अपनी सीमाओं के साथ जुड़ा है। उन समाजों में जिनमें सशक्त लोकतांत्रिक प्रवृतियाँ विद्यमान होती हैं, उनमें रूढ़िवाद का समानता का विरोध तथा असमानता का तर्क उसे अलोकप्रिय बना देता है। परिणामस्वरूप, रूढ़िवादी विचारधारा विश्वव्यापी महत्ता प्राप्त करने में विफल रही है। अपने आपमें, रूढ़िवाद अति विस्तृत है और उस सीमा तक यह एक अस्प-ट विचारधारा ही बन कर रह गयी है। जो आज विप्लपकारी है, आने वाले कल में वह वैसा नहीं रहता।

21.7 अभ्यास प्रश्न

1. रूढ़िवाद के अर्थ को समझाए। किन मुख्य रूपों में "रूढ़िवाद" शब्द का प्रयोग होता है?
2. आपके विचार में रूढ़िवाद के सिद्धान्त क्या-क्या हैं?
3. रूढ़िवाद के विशे-ा लक्षणों को संक्षेप में वर्णित कीजिए।
4. एक रूढ़िवादी विचारक के रूप में एडमण्ड बर्क पर एक टिप्पणी लिखिए।
5. माइकल ऑकशॉट किस प्रकार परम्परावाद का पक्ष लेता है? विस्तार में समझाइए।